B.M.A College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
BA (Hons) part-II पेपर-III 30, 9, 20

क्षेत्रीय दलों (राज्य दलों) के लक्षण

Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of Pol-Sci

* इनकी शक्ति प्रमुख रूप से उस राज्य विशेष तक सीमित होती है जिस राज्य में उन्हें क्षेत्रीय या राज्य दल की मान्यता प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए जनता दल (यू) का प्रमुख प्रभाव क्षेत्र बिहार राज्य और समाजवादी दल का प्रमुख प्रभाव क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य है।
* क्षेत्रीय दल नीति निर्धारण में उस राज्य ~~विशेष उन्हें~~ के क्षेत्रीय हितों को या उन राज्यों के हितों को विशेष रूप से ध्यान में रखते हैं, जिस राज्य में उन्हें क्षेत्रीय दल की स्थिति प्राप्त होती है, लेकिन इस बात का यह आशय नहीं लिया जा सकता कि वे राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करते हैं।
* केन्द्रीय सत्ता में भागीदारी प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय दल, अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ या किसी राष्ट्रीय दल के साथ सहयोग अथवा गठबन्धन की नीति और स्थितियों को अपनाते हैं। इस प्रसंग में समय-समय पर उनके द्वारा अपनी स्थिति में परिवर्तन किया जा सकता है।
* भारतीय राजनीति में अनेक बार इस विचार को अपना लिया जाता है कि क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय एकता को कमजोर करते हैं। वस्तुतः ऐसा कुछ भी नहीं है। विविधताओं से भरे भारत देश में अनेक बार क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय-एकता को मजबूत करने का कार्य राष्ट्रीय दलों की तुलना में भी अधिक अच्छे प्रकार से सम्पन्न कर पाते हैं। राष्ट्रीय दल हो या क्षेत्रीय दल कोई दल राष्ट्रीय एकता को मजबूत करेगा या कमजोर, यह बात दल की नीति और घोषित नीति की तुलना में भी अधिक सीमा तक उसके कार्यकरण पर निर्भर करती है। क्षेत्रीय दल केवल एक स्थिति में राष्ट्रीय हितों को हानि पहुँचाने का कारण बनाते हैं और यह स्थिति है: राष्ट्रीय हितों के मूल्य पर क्षेत्रीय हितों को पूरा करने की चेष्टा करना।

Scanned with CamScanner